कोई नहीं हक बिगर

प्यारे सुन्दरसाथ जी, श्री राज जी और हमारे बीच कोई पर्दा है तो वह है मैं खुदी और वजूदों का जब तक इस वजूद की मैं खुदी मिटकर धनी की मैं नहीं आ जाती, तब तक ही धनी और हमारे बीच पर्दा है, गुनाह है, और दूरियां हैं। जब श्री राजी महाराज की मेहर और हुकुम से धनी की पहचान हो जाय, जैसे कि श्री इन्द्रावती जी को हुई तो हर तरह से सहूर और विचार करके देखा तो पता चला कि हमारा अपना तो कुछ भी नहीं है। जो कुछ है, वह सब श्री राजी का ही है। श्री राजजी का हुकम, इलम और इश्क, जोश, मेहर सभी कुछ स्वयं श्री राजी महाराज से ही है। वाणी में फरमाया है :-

महामत कहे ए मोमिनों कोई नहीं हक बिगर।
लाख बेर मैं देखिया, फेर-फेर सहूर कर।।

सिन्धी प्र.१४ चौ. ३५

हम तो श्री राजी के तन और श्यामाजी के अंग परमधाम में धनी के चरणों में सोये हैं। राज जी ने अपने ही दिल में खेल दिखाने की चाहत पैदा कर और हम पर फ़रामोशी डालकर अपनी नजरों से माया का खेल दिखा रहे हैं।

तन तो अपने अर्स में, सो तो सोए नींद में।
जागत है एक खावंद, ए नींद दई जिनने।।

सिन्धी प्र. १५ चौ. ४

देकर नींद रूहन को, खेल दिखावत नज़र।
तो ए खेल कौन देखत, कोई है बिना हुकम कादर।।

सुन्दरसाथ जी इस तरह से श्री राज जी का हुकम ही हमें खेल दिखा रहा है पर स्वयं हुकम भी हमें धनी से जुदा नहीं कर सकता। इसीलिए अपने ही तनों पर पड़ी फरामोशी को दूर करने के लिए अपने घर की याद दिलाने के लिए स्वयं तन धारण करके आये और अपनी निजबुध की वाणी से हमें अपनी व अपने स्वरूप की पहचान करवा रहे है। जब तक धनी के स्वरूप की पहचान नहीं होती, रूह इस माया के खेल में जाग्रत नहीं हो पाती। इसलिए इलम द्वारा अपनी पहचान करवाते हुए यूं फरमां रहे हैं :-

कहे इलम तुमहीं पट, तुमही कुंजी पट की।
कुल अकल दई तुमको, देखो सीधी या उल्टी।।

सिन्धी प्र. १५ चौ.८

निजबुध के ज्ञान द्वारा धनी हमारे ही दिल को अर्स कर हमारे ही दिल में बैठे है। जिन नासुत के तनों में हमारी सुरता आई है। उन्हीं के दिलों को अर्स कर अपनी पहचान करवा रहे है। वाणी की कुंजी से सब दरवाजे खोल दिए। निजबुध का वो बेशक इलम दिया। जिससे कहीं भी शक की

Nijanand App

गुंजाइश ही नहीं रही। बेशक हमारी हांसी होगी। क्योंकि परमधाम में किये वायदों में से हमने एक भी नहीं निभाया। धनी तो अपनी रूहों को माया से निकालने के लिए उपाय पर उपाय किये जा रहे है :-

हके द्वार दिया हाथ अपने, और दई इलम पूरी पेहचान।
तो क्यों सहे आड़ा पर, क्यों न खोले द्वार सुभान।।

सिंधी प्र. १५ चौ. १२

पहचान के बाद रूह धनी के हुकम के आधीन नहीं रहेगी। वह अपने धनी से अवश्य ही मिलन करेगी। धनी भी इलम से यही बात समझा रहे हैं कि रूहों मैनें तुम्हें खेल अवश्य दिखाया है, और तुम आकर भूल गई। अब इलम से मैं ही तुम्हें जगा भी रहा हूँ। अब यह तुम पर (रूहों पर) है कि तुम खेल को पकड़ों या अपने धनी को? प्यारे सुन्दर साथ जी पहले की चौपाई में उल्टी या सीधी से यही तात्पर्य है कि पहचान होने पर तुम इस खेल जो असत, जड़ और दुख है उसे पकड़ते हो या अपने उस सत्, चिद् और आनन्द के अखण्ड सुखो को पकड़ते हो जो कि हमेशा से तुम्हारे है। इलम द्वारा सुखों की याद दिलाकर हमें माया से छुड़वा रहे है।

श्री महामत कहे ए मोमिनों, हकें हांसी करी पूरन।
देखो खावंद या खेल को, ए कुंजी तेरा दिल रोशन।।

अब हम वाणी से हुकम और इलम को समझे, पहचान करे ये खेल जो नाचीज है। उसे छोड़कर सर्वदा जो हमारे अखण्ड सुख है, उनमें विचरण करे। धनी का हुकम जो कभी भी जुदागी नहीं चाहता अपने दिल में रखते हुए हर पल उन पच्चीस पक्षों में ही लीन रहे। और उस अन्तिम हुकम की इन्तजार में कि कब हमें धनी अर्स में अपने चरणों तले जगाये और हम फिर से अखण्ड सुखों को प्राप्त करें।

श्रीमती कंचन आहुजा, जयपुर

संवेदना

हमारे लखनऊ सुन्दरसाथ के शिरोमणी सुन्दरसाथ डाक्टर मुनीराम, इन्दिरा नगर की अत्यन्त मेधावी व कुशाग्र युवा पुत्री कुमारी रजनीश का दिनांक ११ नवम्बर २००१ को धाम गमन हो गया। धाम दर्शन परिवार इनके पिता डा० मुनीराम, माता श्रीमती अरुणा व दोनों भाइयों व लखनऊ सुन्दरसाथ के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है व धामधनी से प्रार्थना करता है कि वे स्नेहशील रजनीश की आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें

धाम दर्शन

Nijanand App